भारत सेवाश्रम संघ

प्रतिष्ठाता : आचार्य्य श्रीमत् स्वामी प्रणवानन्दजी महाराज

ॐ श्रीश्री संघवाणी

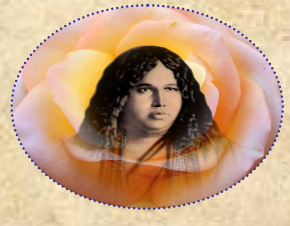

(१) लक्ष्य क्या है ?
महामुक्ति, आत्मोपलब्धि।

(२) धर्म क्या है ?
त्याग, संयम, सत्य, ब्रह्मचर्य्य।

(३) महामृत्यु क्या है ?
आत्मविस्मृति।

(४) आदर्श जीवन क्या है ?
आत्मबोध, आत्मस्मृति,
आत्मानुभूति।

(५) महापुण्य क्या है ?
वीरत्व, पुरुषत्व, मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व।

(६) महापाप क्या है ?
दुर्बलता, भीरुता, कापुरुषता,
संकीर्णता, स्वार्थपरता।

(७) महाशक्ति क्या है ?
धैर्य्य, स्थैर्य्य, सहिष्णुता

(८) महासम्बल क्या है ?
आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्ममर्य्यादा।

(९) महाशत्रु कौन है ?
आलस्य, निद्रा, तन्द्रा, जड़ता, रिपु और इन्द्रियगण।

(१०) परम मित्र कौन है ?
उद्यम, उत्साह, अध्यवसाय।

इस युग की आकांक्षित क्या है ?

महाजागरण, महासमन्वय, महामिलन, महामुक्ति।

संघवाणी : *यह संघवाणी तुम्हारे संघनेता द्वारा उपलब्ध कुछ महान् सत्य का प्रकाश है। एक एक महापुरुष एक एक समय आकर अपनी कठोर तप साधना से कुछ उपलब्ध सत्य जगत के कल्याण के वास्ते जन समाज में प्रचार कर जाते हैं। यह संघवाणी भी उसी तरह जन समाज का कळ्याण के वास्ते प्रचार किया जा रहा है। यह जाति का युगमन्त्र है, जागरण मन्त्र है, समग्र देशवासियों का नित्य पाठ्य, सदास्मरणीय है।*

मुख्य कार्य्यालय : २११, रासबिहारी एवेन्यु, बालीगंज, कोलकाता - ७०० ०१९, पश्चिमबंग
कुछ शाखायें : गया, काशी (वाराणसी), पुरी, प्रयाग, वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, हरद्वार, गंगासागर, द्वारका, नई दिल्ली, मुम्बइ, रामेश्वरम, कन्याकुमारी...